RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य मर्यादा
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 75, अंक : 18 एक प्रति 2 : रुपये
रविवार 15 जुलाई, 2018
विक्रमी सम्वत् 2075, सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये
दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष-75, अंक : 18, 12-15 जुलाई 2018 तदनुसार 31 आषाढ़ सम्वत् 2075 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

यज्ञ में आने का प्रयोजन

ले०-स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

ऋतधीतय आ गत सत्यधर्माणो अध्वरम्।
अग्नेः पिबत जिह्वया।।

-अथर्व० ५।५१।२

शब्दार्थ-हे सत्यधर्माणः = सत्यधारियो! **ऋतधीतये** = ऋत के मनन के लिए **अध्वरम्** = यज्ञ को **आगत** = आओ और **जिह्वया** = जिह्वा से **अग्नेः** = अग्नि का **पिबत** = पान करो, अथवा **अग्नेः** = अग्नि की **जिह्वया** = जिह्वा द्वारा **पिबत** = पान करो।

व्याख्या-वैदिक धर्म यज्ञप्रधान धर्म है। **'आयुर्यज्ञेन कल्पताम्'** = (जीवन यज्ञ से सफल हो) वाक्य यजुर्वेद में कई बार आया है। यज्ञ के अध्वर, मख आदि कई नाम हैं। यहाँ 'अध्वर' शब्द का प्रयोग हुआ है। 'अध्वर' शब्द के सम्बन्ध में थोड़ा-सा जान लेने से मन्त्र का भाव समझने में आसानी होगी। अध्वर पर लिखते हुए यास्काचार्य जी लिखते हैं-**'ध्वरतिर्हिंसाकर्मा तत्प्रतिषेधः'**। **अध्वर** = दो शब्द हैं-**अ** (न) **+ध्वर**। ध्वर का अर्थ है-हिंसा। अध्वर का अर्थ है-न हिंसा = अहिंसा। भाव यह हुआ कि अध्वर उन कर्मों का नाम हैं जिनमें हिंसा न हो, अथवा हिंसा का निषेध किया जाता हो। यज्ञ में हिंसा मानने वालों का खण्डन तो इस 'अध्वर' शब्द से ही हो जाता है। अध्वर का एक दूसरा अर्थ भी है-अध्व+र = मार्ग देना, मार्ग दिखलाना। यज्ञ शब्द का एक अर्थ है संगतिकरण=सत्संगति। इस अर्थ को अध्वर=मार्ग दिखलाना के साथ मिलाएँ तो **अध्वर** = यज्ञ का थोड़ा-सा भाव स्पष्ट हो जाता है।

अध्वर में= सत्संग में आने का प्रयोजन बतलाया-**ऋतधीतये** = ऋत के मनन के लिए। सत्संग के बिना ऋत का ज्ञान हो ही नहीं सकता। पाठशाला, विद्यालय आदि में जाना सत्संग करना है। वहाँ विद्यार्थी गुरु की संगति करता है। पुस्तक पढ़ते हुए उस पुस्तक के लेखक का संग हो रहा है। ऋतधीति ऋत का मनन ही है, जैसा कि ऋग्वेद (९।९७।३३) में लिखा है-**'ऋतस्य धीतिं ब्रह्मणो मनीषाम्'** = ऋत की धीति ब्रह्म=ज्ञान का मनन है। ऋत के मनन का उद्देश्य मनन ही होना चाहिए-**'ऋतमृताय पवते सुमेधाः'** (ऋ० ९।९७।२३) = महाबुद्धिमान् ऋत के लिए ऋत को पवित्र करता है, ऋत के लिए, ऋतानुसार आचरण करने के लिए, क्योंकि यदि ऋत के अनुसार आचरण न हुआ तो कल्याण न होगा-**'ऋतस्य पन्थां न तरन्ति दुष्कृतः'** = (ऋ ९।७३।६) = दुराचारी ऋत के मार्ग को पार नहीं कर पाते। जो ऋतानुसारी नहीं है, वह दुराचारी है, अतः ऋत के मनन के साथ ऋत का धारण=आचरण भी आवश्यक है। ऋतधीति कौन कर सकते हैं? इसका समाधान है कि **'सत्यधर्माणः'** -सत्यधर्मा, सत्यधारी। वेद में कहा भी तो है-**'ऋतस्य धीतिर्वृजिनानि हन्ति'** (ऋ० ४।२३।८) = ऋत का मनन पापों को नष्ट कर देता है, अर्थात् ऋत-मनन से निष्पाप होकर मनुष्य सत्यधारण-सामर्थ्य प्राप्त कर सकता है। ऋत का पान अग्नि की = ज्ञान की जुबान से करना चाहिए उसमें बहुत मिठास होता है-**'ऋतस्य जिह्वा पवते मधु प्रियम्'** (ऋ० ९।७५।२) = ऋत की जिह्वा अभीष्ट मिठास देती है।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

तं त्वा शोचिष्ठ दीदिवः सुम्नाय नूनमीमहे सखिभ्यः।।

-ऋ० ५.२४.४

भावार्थ-हे प्रकाशस्वरूप प्रकाश देने वाले पतितपावन जगदीश! आपसे अपने और अपने मित्रों और बान्धवों के सुख के लिए प्रार्थना करते हैं। हम सब आपके प्यारे पुत्र, आपकी भक्ति में तत्पर होते हुए लोक और परलोक में सदा सुखी रहें। हम पर ऐसी कृपा करो।

त्वं हि विश्वतोमुख विश्वतः परिभूरसि।
अप नः शोशुचदघम्।।

-ऋ० १.९७.६

भावार्थ-हे विश्वतोमुख सर्वद्रष्टा परमात्मन्! आप सम्पूर्ण जगत् में व्याप्त हैं, अतएव आपका नाम विश्वतोमुख है। आप अपनी सर्वज्ञता से, सब जीवों के हृदय के भावों को और उनके कर्मों को जानते हैं, कोई बात आपसे छिपी नहीं। इसलिए हमारी ऐसी प्रार्थना है कि, हमारे सब पाप और पापों के कारण दुष्ट संकल्पों को नष्ट करें। जिससे हम आपके सच्चे ज्ञानी और भक्त बन सकें।

पाहि नो अग्ने रक्षसः पाहि धूर्तेरराव्णः।
पाहि रीषत उत वा जिघांसतो बृहद्भानो यविष्ठ्य।।

-ऋ० १.३६.१५

भावार्थ-हे महाबली तेजस्वी सबके नेता परमात्मन्! राक्षस, धूर्त, कृपण, कंजूस, मक्खीचूस, स्वार्थान्ध पुरुषों से हमारी रक्षा कीजिए और जो दुष्ट, हमें पीड़ा देने तथा जो दुष्ट शत्रु, हमारे नाश की इच्छा करने वाले हैं ऐसे पापी लोगों से हमें सदा बचाओ। हम आपकी कृपा से सुरक्षित होकर अपना और जगत् का कुछ भला कर सकें।

अग्निं मन्ये पितरमग्निमापिमग्निं भ्रातरं सदमित्सखायम्।
अग्नेरनीकं बृहतः सपर्यं दिवि शुक्रं यजतं सूर्यस्य।।

-ऋ० १०.७.३

भावार्थ-परमात्मा ही हमारा सबका सच्चा पिता, माता, बन्धु, भ्राता सदा मित्रादि सब-कुछ है. संसार के पिता मातादि सम्बन्धी, इस शरीर के रहने तक सम्बन्धी हैं। इस शरीर के नष्ट होने पर इस जीव का न कोई सांसारिक पिता है, न कोई माता भ्राता आदि है। सच्चा पिता आदि तो इसका परमात्मा ही है, इसी के ज्योतिरूप बल से द्यु आदि लोकों में सूर्य, चन्द्रादि प्रकाश कर रहे हैं, इसलिए ही सत्-शास्त्रों में, परमात्मा को ज्योतियों का ज्योति वर्णन किया गया है। परमात्मा की ज्योति के बिना सूर्यादि कुछ भी प्रकाश नहीं कर सकते, इसलिए आओ! भ्रातृगण! हम सब उस ज्योतियों के ज्योति, जगत्पिता परमात्मा की प्रेम से स्तुति, प्रार्थना, उपासना करें, जिससे हमारा कल्याण हो।

कुछ शंकाओं का समाधान

ले०-पं० खुशहाल चन्द्र आर्य C/o गोबिन्द राय आर्य एण्ज सन्ज १८० महात्मा गान्धी रोड़, (दो तल्ला) कोलकत्ता-700007

हम साधारण व्यक्ति संस्कृत के विद्वान् न होने से वेदों के मन्त्रों के सही अर्थ नहीं लगा सकते और न ही वेदों, उपनिषदों, दर्शनों, स्मृतियों व ब्राह्मण ग्रन्थों को पढ़ सकते हैं इसलिए हम वैदिक सिद्धान्तों को सही ढंग से नहीं जान सकते। ऐसे में हमें महर्षि दयानन्द कृत ग्रन्थों की शरण में जाना पड़ेगा। महर्षि दयानन्द ने मानव जाति पर बड़े उपकार किये हैं जिन्होंने पूरे वैदिक वाङ्मय का अपने ग्रन्थों में विस्तारपूर्वक सही अर्थों का वर्णन किया है, जिनको पढ़कर हम अपनी शंकाएँ दूर कर सकते हैं और उनको पढ़कर अपने जीवन को सफल बना सकते है। वैसे तो महर्षि ने अनेकों छोटी बड़ी पुस्तकें लिखी हैं, जो सभी सारयुक्त है, जिनको पढ़कर मनुष्य पूर्ण ज्ञानवान बन सकता है। यदि कोई उनके सभी पुस्तकें न भी पढ़ सके तो कम से कम उनके लिखे तीन महान ग्रन्थ जिनमें पहला अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश, दूसरा संस्कार विधि तीसरा ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका है। इन तीनों ग्रन्थों को कोई ध्यानपूर्वक पढ़ लेवे तो वह एक अच्छा वैदिक विद्वान् बन सकता है और यदि इनमें लिखे विचारों को अपने जीवन में उतार लेवे और उन शिक्षाओं पर आचरण करे तो मनुष्य अपने जीवन को सुख व शान्ति से व्यतीत करते हुए वह हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकता है, साथ ही मानव प्राप्ति का मुख्य उद्देश्य जिसके लिए जीव मनुष्य योनि में आता है। वह अपने परम लक्ष्य मोक्ष को भी प्राप्त कर सकता है।

यहाँ मैं महर्षि दयानन्द कृत उनके अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास ''वेद विषयं व्याख्यास्याम:'' में उठाये कुछ प्रश्नों के उत्तर या समाधान महर्षि ने किया है उनका उल्लेख कर रहा हूँ। पाठकों की ज्ञान वृद्धि के लिए प्रश्न व उत्तर इसी भांति है जिनको मैने अपनी सरल भाषा व शैली में लिखा है:

१. प्रश्न-जब ईश्वर सर्व शक्तिमान है तो वह अपने भक्त के सभी कार्य क्यों नहीं कर सकते और अवतार धारण क्यों नहीं कर सकते।

उत्तर-महर्षि सर्व शक्तिमान का अर्थ बताते हुए लिखते हैं कि सर्व शक्तिमान का अर्थ यह नहीं होता कि वह सभी कार्य कर सकता है, अपितु सर्वशक्तिमान का अर्थ होता है कि वह अपने कार्य से सृष्टि को बनाना, पालन करना व संहार करना और जीव को उसके किये अच्छे व बुरे कर्मों का यथावत् फल देना यानि जैसे आपने कर्म किये हैं उनका फल दु:ख व सुख के रूप में इसी योनि में देना या मृत्यु के उपरान्त नई योनि उसी के कर्मानुसार देना। इन कार्यों में ईश्वर किसी दूसरे का सहयोग नहीं लेता। सभी कार्य अपने सामर्थ्य से करता है। इसलिए ईश्वर सर्वशक्तिमान कहलाता है। यदि ईश्वर अपने भक्तों की इच्छानुसार कार्य करे तो ईश्वर पराधीन बन जाता है और भक्त लोग अनेक हैं, ईश्वर कितने भक्तों का कार्य करेगा सो यह केवल कल्पना है। यहाँ समझने की बात एक यह भी है कि ईश्वर स्वयं भी अपने नियमों व व्यवस्था में बन्धा हुआ है, वह अपने नियमों व व्यवस्था को स्वयं भी नहीं तोड़ सकता। अब प्रश्न यह उठता है कि ईश्वर राम और कृष्ण के रूप में अवतार लेता है या नहीं। इसका उत्तर यह है कि ईश्वर के अवतार लेने से ईश्वर की शक्ति को बढ़ाया नहीं बल्कि घटाया जा रहा है। जो ईश्वर सारी सृष्टि को जिसमें करोड़ों सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी व तारे हैं उनको यथावत् अपनी सुव्यवस्था के अनुसार सृष्टि को चार अरब बतीस करोड़ वर्षों तक चलाता है और इतनी ही अवधि तक प्रलय में व्यवस्थित रखता है। क्या वह रावण और कंस को अपनी स्थिति में रहते हुए ही नहीं मार सकता। यह एक हास्यप्रद सी जान पड़ती है। इसलिए अवतार लेने की अवधारणा बिल्कुल गलत जान पड़ती है। हाँ! राम और कृष्ण एक महान् पुरुष थे जिन्होंने समय की आवश्यकता को देखने हुए अपने महान् सामर्थ्य से अद्भुत कार्य किये इसलिए उनको ईश्वर के अवतार न कह कर, उनको एक महान् पुरुष कहना उचित है।

२. प्रश्न-दया और न्याय भिन्न-भिन्न गुण है। जो न्याय करेगा वह दया नहीं कर सकता और जो दया करेगा वह न्याय नहीं कर सकता कारण न्याय करने वाले को उसके किये हुए बुरे कर्मों के अनुसार उसे दण्ड देना पड़ेगा और दया करने से उसे दण्ड न देकर छोड़ना पड़ेगा, इसलिए यह दोनों गुण अलग-अलग है।

उत्तर-नहीं ! यह दोनों एक समान है, केवल नाम का अन्तर है। बुरे काम करने वाले को दण्ड देना ही दया है कारण दण्ड देने से वह सुधर जायेगा और दोबारा बुरा काम नहीं करेगा, जिससे उसका आगे का जीवन अच्छा बन जायेगा। इसलिए जो न्याय से प्रयोजन सिद्ध होता है, वही दया से दण्ड देने का प्रयोजन है कि मनुष्य अपराध करना छोड़ देवे जिससे वह दु:खों को प्राप्त न हो। वही दया कहलाती है जो दूसरों को दु:खों से छुड़ाती है। दूसरी बात यह है कि किसी डाकू को दण्ड दे कर जेल न भेजें तो वह कितने ही लोगों को दु:ख देगा इसलिए डाकू को दण्ड देने से ही दूसरों पर दया हो जाती है। डाकू के जेल जाने से वे सुखी हो जाते हैं। डाकू भी जेल में घुटने के बाद जेल के डर से आगे डाका नहीं डालेगा इसलिए न्याय करना ही उसके ऊपर दया है, इसलिए न्याय और दया में कोई भेद नहीं।

3. प्रश्न-जब हम ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना करते हैं तो क्या ईश्वर हमारे पाप क्षमा कर देता है। और यदि क्षमा नहीं करता तो फिर स्तुति, प्रार्थना, उपासना करने से लाभ ही क्या ?

उत्तर-नहीं! स्तुति, प्रार्थना व उपासना करने से मनुष्य को अन्य लाभ है। स्तुति से ईश्वर में प्रीति होती है और प्रीति होने से मनुष्य ईश्वर के गुण, कर्म स्वभाव को देखकर अपने गुण, कर्म, स्वभाव को अच्छा बनाता है। यानि ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव नि:स्वार्थ भाव से परोपकार करना है, वह बिना कोई शुल्क लिये ही प्राणी-मात्र को जल, हवा, प्रकाश आदि देता रहता है। यहाँ तक कि बुद्धि की वृद्धि के लिए वेद-ज्ञान भी सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने चार ऋषियों द्वारा दिया ताकि मानव-मात्र वेद-ज्ञान को प्राप्त कर अपने जीवन को सफल व सार्थक बनाते हुए अपने परम व अन्तिम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर सके। प्रार्थना से निरभिमानता, उत्साह और साहस की प्राप्ति होती है। उपासना से परब्रह्म से मेल और उसका साक्षात्कार होता है। यहाँ साक्षात्कार होने का तात्पर्य ईश्वर के दर्शन होना नहीं बल्कि ईश्वर व मुख्य गुण परम् आनन्द की अनुभूति होना है। ईश्वर के पास अपने दो गुण विशेष है। पहला गुण ज्ञान और दूसरा आनन्द है जिसे हम परम् आनन्द कहते हैं। ज्ञान तो मनुष्यों की आवश्यकता के अनुसार वेदों में दे रखा है जो ईश्वर सृष्टि के आरम्भ में चार ऋषियों के हृदय में प्रकाश करके उनसे दिलाता है जिनके अनुसार चल कर मनुष्य अपने परम् लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करता है। दूसरी तरह से ज्ञान, मनुष्य ईश्वर की बनाई सृष्टि को देखकर ले सकता है। आनन्द मनुष्य अपने जीवन में यम, नियम आसन, प्राणायाम प्रत्याहार करते हुए समाधि अवस्था में पहुंच कर प्राप्त करता है और दूसरा तरीका ईश्वर की भांति परोपकारी कार्यों को करके प्राप्त कर सकता है। इसीलिए महर्षि दयानन्द ने कहा है कि मनुष्य को ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना नित्य प्रात: व सायं अवश्य करनी चाहिए।

जिस प्रकार हम किसी व्यक्ति से कोई चीज प्राप्त करते है तो हम उसे धन्यवाद देते है, उसी प्रकार ईश्वर हमें बिना शुल्क लिए हवा, पानी, रोशनी देता है। जिससे हमारा जीवन चलता है तो हमारा यह पावन कर्त्तव्य बन जाता है कि हम उस ईश्वर का हृदय से ध्यान करके उसे धन्यवाद देवें। यही हमारी ईश्वर के प्रति कृतज्ञता होगी।

ऐसे-ऐसे दस, बीस, पच्चास नहीं सैकड़ों शंकाओं का समाधान आपको महर्षिकृत ग्रन्थों में मिलेगा यदि कोई व्यक्ति महर्षि के तीनों ग्रन्थों को न पढ़ सके तो कम से कम एक ग्रन्थ ''सत्यार्थप्रकाश'' को तो आवश्य पढ़ें। इसी में उसकी सब समस्याओं व शंकाओं का समाधान मिल जायेगा और वह अपना जीवन सुखमय व आनन्दित बना कर एक सच्चा मानव या ''आर्य'' बन कर अपने जीवन को सफल बनाते हुए सुखी व सम्पन्न जीवन जीते हुए मोक्ष प्राप्ति का अधिकारी बन सकेगा।

सम्पादकीय

सभा से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं का हार्दिक धन्यवाद

24 जून 2018 रविवार को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर में आयोजित पंजाब की सभी आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं के कार्यकर्ताओं का सम्मेलन आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में बड़े उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। पंजाब की समस्त आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं के महानुभावों ने इस भव्य समारोह में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। ऋषि दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ाने के लिए हम सभी एकजुट होकर किस प्रकार कार्य करें, इस पर विशेष रूप से चर्चा की गई। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य, हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामपाल आर्य, महामन्त्री श्री उम्मेद शर्मा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य, कोषाध्यक्ष श्री विद्यामित्र ठुकराल इस कार्यकर्ता सम्मेलन में मुख्य रूप से उपस्थित हुए तथा इन्होंने अपने उद्बोधनों से कार्यकर्ताओं को लाभान्वित किया। सभी वक्ताओं ने अपने-अपने विचार व्यक्त करते हुए इसी बात पर बल दिया कि वर्तमान में राष्ट्र के समक्ष जो समस्याएं हैं, जो कुरीतियां फैल रही हैं उन्हें दूर करने में आर्य समाज किस प्रकार अपनी भूमिका निभा सकता है। आज की युवा पीढ़ी को आर्य समाज के साथ किस प्रकार जोड़ा जाए? इस पर विशेष रूप से चर्चा हुई। इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य कार्यकर्ताओं को प्रेरणा देना था। अत: पंजाब की सभी आर्य समाजों ने जो उत्साह इस कार्यकर्ता सम्मेलन में दिखाया है उससे सभी को एक नई प्रेरणा मिली है। अत: मैं पंजाब की समस्त आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं का धन्यवाद करता हूँ जिनके सहयोग से यह सम्मेलन उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ।

मैं पंजाब की सभी आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं का आवाहन करते हुए कहना चाहता हूं कि इस कार्यकर्ता सम्मेलन के द्वारा आपको जो प्रेरणा मिली है, उत्साह प्राप्त हुआ है उसी उत्साह एवं प्रेरणा के साथ अपने-अपने क्षेत्र में आर्य समाज का कार्य करें। आम जनता तक अपनी पहुंच बनाएं। अपने आस-पास के पाखण्ड एवं अन्धविश्वास को दूर करने के लिए लोगों को आर्य समाज के साथ जोड़ने का प्रयास करें। आज समाज में पाखण्ड किस तरह फैल चुका है इसका उदाहरण हमें अभी-अभी दिल्ली के बुराड़ी काण्ड में देखने को मिला। किस प्रकार तांन्त्रिकों के जाल में फंसकर एक ही परिवार के 11 लोगों ने आत्महत्या करके अपने प्राण त्याग दिए। यह घटनाएं केवल दिल्ली में ही नहीं अपितु देश के अन्य स्थानों पर भी हो रही है। लोग इन ढ़ोगी बाबाओं, तान्त्रिकों के जाल में फंस रहे हैं। अपना मानसिक, शारीरिक और आर्थिक शोषण इन तान्त्रिकों से करवाकर अपना जीवन बर्बाद कर रहे हैं। चमत्कारों के नाम पर भोली-भाली जनता को ठगा और लूटा जाता है। इसलिए हम महर्षि दयानन्द की विचारधारा को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें। महर्षि दयानन्द की विचारधारा से ही इस प्रकार के पाखण्ड एवं अन्धविश्वास को दूर किया जा सकता है। अपने-अपने क्षेत्रों में लोगों को जागरूक करते हुए उन्हें इन पाखण्डियों, तान्त्रिकों के जाल से बचाने का प्रयास करें। आर्य समाज से बाहर निकलकर लोगों के घरों में पारिवारिक सत्संगों को बढ़ावा दें। सार्वजनिक स्थानों पर, पार्कों आदि में ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन करें जिनसे आम जनता लाभान्वित हो सके।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों से भी निवेदन करना चाहता हूँ कि जिस प्रकार की चिन्ता इस कार्यकर्ता सम्मेलन में व्यक्त की गई है कि आज युवा पीढी आर्य समाज के साथ नहीं जुड़ रही है। किस प्रकार युवा पीढ़ी को आर्य समाज के साथ जोड़ा जाए? इस समस्या का समाधान केवल और केवल शिक्षण संस्थाएं ही हल कर सकती हैं। सभा से सम्बन्धित सभी स्कूलों, कॉलेजों में इस प्रकार की गतिविधियों का आयोजन हो, नैतिक शिक्षा एवं आर्य सिद्धान्तों से सम्बन्धित शिविरों का आयोजन किया जाए जिससे युवा पीढ़ी जागरूक हो और शिक्षण संस्था से शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी आर्य समाज की विचारधारा से जुड़े रहें। आर्य शिक्षण संस्थाओं का उद्देश्य केवल किताबी शिक्षा देना या पैसा कमाना नहीं था अपितु इस प्रकार के नागरिकों का निर्माण करना था जो सम्पूर्ण जीवन में अपने धर्म के प्रति, नैतिक मूल्यों के प्रति, अपनी संस्कृति और सभ्यता के प्रति जागरूक रहें। इसलिए मेरा निवेदन है कि शिक्षण संस्थाओं में समय-समय पर ऐसे कार्यक्रम आयोजित होते रहें जिनके द्वारा बच्चों में अपने नैतिक मूल्यों का विकास हो सकें। बच्चों को गायत्री मन्त्र, ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना के आठ मन्त्र, आर्य समाज के दस नियम, शान्तिपाठ तथा आर्य समाज के मूल सिद्धान्तों जानकारी हो।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश के अन्त में स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश में जो छोटी-छोटी बातें लिखी हैं उनका ज्ञान होना चाहिए। धर्म क्या है? अधर्म क्या है? धर्म के लक्षण कौन-कौन है? पाप-पुण्य क्या है? ईश्वर क्या है? ईश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना कैसे करें? स्वर्ग क्या है? नरक क्या है? तीर्थ किसे कहते हैं? इन छोटी-छोटी बातों पर महर्षि दयानन्द ने सरल शब्दों में प्रकाश डाला है तथा संक्षिप्त शब्दों में इनकी परिभाषाएं दी हैं। इन सभी सिद्धान्तों की जानकारी आर्य शिक्षण संस्थाओं में पढ़ने वाले बच्चों को होनी चाहिए। ये बातें हर समय उनके दिमाग में रहनी चाहिए ताकि कोई उन्हें धर्म के नाम पर भ्रमित न कर सके। इसलिए इस कार्यकर्ता सम्मेलन में युवा पीढ़ी को आर्य समाज से जोड़ने के लिए जो प्रेरणा दी गई है उसी के अनुसार कार्य करते हुए ऐसे बच्चों का निर्माण करें जिनके ऊपर शिक्षण संस्थाओं को गर्व हो। जो आर्य समाज के साथ जीवन पर्यन्त जुड़े रहें। अगर शिक्षण संस्थाएं इसी उद्देश्य के साथ कार्य करे तो निश्चित रूप से महर्षि दयानन्द की विचारधारा का प्रचार-प्रसार होगा और आर्य समाज की उन्नति होगी।

अन्त में मैं पुन: आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं के कार्यकर्ताओं एवं आर्यजनों का हार्दिक धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने इस कार्यकर्ता सम्मेलन की सफलता के लिए अपना पूर्ण सहयोग दिया। इतनी गर्मी के बावजूद भी पूर्ण उत्साह के साथ इस सम्मेलन में भाग लेकर अपने संगठन की शक्ति एवं एकता का जो परिचय आप लोगों के द्वारा दिया गया उसके लिए आप बधाई एवं धन्यवाद के पात्र हैं। मुझे पूर्ण आशा है कि इस सम्मेलन के माध्यम से हमें जो विचार शक्ति प्राप्त हुई है, उसके द्वारा निश्चित रूप से आर्य समाज के प्रचार-प्रसार को बल मिलेगा और आप सभी एकजुट होकर महर्षि दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ाने के लिए कार्य करेंगे।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

आर्य मर्यादा साप्ताहिक में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं।

बच्चों में सृजन-शक्ति का विकास

ले.-डा. निर्मल कौशिक कर्मशील संस्कृत विकास मंच, फरीदकोट

शिक्षा ज्ञानार्जन का माध्यम है। शिक्षा भले ही औपचारिक हो अथवा अनौपचारिक, इसमें शिक्षा प्रदान करने वाले को इस बात पर ध्यान देना अनिवार्य है कि जिसे शिक्षा दी जा रही है वह इसके योग्य है भी या नहीं। मगर आज शिक्षा का व्यवसायीकरण हो जाने से शिक्षा के इन मूल्यों का अवमूल्यन हो गया है। आज शिक्षा धन से अर्जित की जाती है और बाद में शिक्षा से धन अर्जित किया जाता है।

शिक्षाविदों ने शिक्षा का उद्देश्य सर्वांगीण विकास बताया है। सर्वांगीण विकास तभी सम्भव है जब बच्चों को सुचारु रूप से शिक्षित किया जाए। उनके व्यक्तित्व की पहचान-परख करके उनकी अभिरुचि के अनुकूल उन्हें वातावरण प्रदान किया जाए। बच्चों की प्रतिभा की परख की जाए और उन्हें विकसित करने के लिए अवसर प्रदान किए जाएं। हम देखते हैं कि बच्चे कागज़ पर तिनके-पत्थर आदि से कई कुछ निर्मित कर बड़ों को बड़े उत्साह से दिखाते है कि हमें शाबाश मिलेगी लेकिन कई बार उनकी भावनाओं को न समझने वाले माता-पिता और अध्यापक उन्हें केवल फटकार देकर उनकी सृजन-क्षमता का गला घोंट देते है। ऐसे बालकों को उत्साहित किया जाना चाहिए और उनका मार्ग-दर्शन करना चाहिए क्योंकि होनहार विरवान के होत चीकने पात।

बच्चों में सृजन की क्षमता होती है मगर उचित दिशा-निर्देश के अभाव में उसका विकास नहीं हो पाता। हम देखते हैं कि छोटे-छोटे बच्चे भी विद्यालय के समारोह में कितनी कुशलता से अपने अध्यापकों के निर्देश में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं। कविता-गायन, निबन्ध-लेखन आदि प्रतिस्पर्धाओं में भी वे अपनी मौलिकता की स्थापना करते हैं।

संस्कृत में एक उक्ति है **मन्दोऽपि निष्प्रयोजनम् न प्रवर्तते** अर्थात् मन्दबुद्धि भी बिना [प्रयोजन] उद्देश्य के किसी कार्य में प्रवृत्त नहीं होता है। अत: फिर सुबुद्धि जीव किसी न किसी प्रयोजन से ही किसी कार्य में संलग्न होता है किसी भी कार्य की सिद्धि के लिए विद्वानों ने तीन तत्त्वों को प्रमुख माना है प्रतिभा, अभ्यास और निपुणता। प्रतिभा प्रत्येक बच्चे में न्यूनाधिक अवश्य होती है। कोई भी बच्चा अपनी प्रतिभा के अनुसार ही कार्य करता है। यही कारण है कि एक ही परिवार के सभी बच्चे योग्य या अयोग्य नहीं होते। इसी प्रकार एक ही कक्षा में एक ही अध्यापक द्वारा समान रूप से पढ़ाए जाने पर भी सभी विद्यार्थी एक समान अंक प्राप्त नहीं करते। इससे प्रमाणित होता है कि प्रतिभा का स्तर भिन्न भले ही हो तो भी सभी बच्चों में प्रतिभा अवश्य होती है। इसी प्रतिभा के विद्यमान रहने पर बच्चे अपनी अन्तर्निहित रचनात्मकता को साकार अभिव्यक्ति प्रदान करने में सक्षम होते हैं। जैसे एक बीज में वृक्ष बनने की क्षमता होती है। ठीक वैसे ही बच्चे के अन्दर रचनात्मक प्रवृत्ति के माध्यम से विकसित होने की क्षमता होती है। मगर ध्यान रहे बीज में वृक्ष बनने की क्षमता तभी सार्थक होती है जब उसे अनुकूल परिवेश और जलवायु उपलब्ध होता है। ठीक इसी प्रकार बच्चों की रचनात्मक रूचियों को भी विकसित करने के लिए घर में, विद्यालय में और समाज में अनुकूल परिवेश का होना अति अनिवार्य है। तभी बच्चों का सर्वांगीण विकास सम्भव है।

प्राय: कहा जाता है कि बच्चे गीली मिट्टी की तरह होते है उनके व्यक्तित्व को बचपन में किसी भी रूप में ढाला जा सकता है। लेकिन यह मिट्टी की क्षमता और कलाकार की कला पर निर्भर करता है। इसके साथ-साथ कुम्हार बर्तन के अन्दर एक हाथ से उसे टूटने से बचाता है तो दूसरे हाथ से उसे आकार प्रदान करता है। ऐसा ही बच्चे की सृजनात्मक क्षमता को विकसित करते समय माता-पिता और अध्यापकों को ध्यान रखना चाहिए और बुरी आदतों से बचाए रखना चाहिए और बुरी आदतों से बचाते हुए उसे अच्छे संस्कार प्रदान करने चाहिए। यह बात सत्य है कि बच्चे का मन कोरी सलेट की तरह होता है उस पर कुछ भी लिखा जा सकता है। मगर सकारात्मक और स्पष्ट लिखा जाने पर ही उसे पढ़ा जा सकेगा। अच्छे संस्कार, परिवेश और अच्छी संगति ही उसकी सृजनात्मक क्षमता के विकास में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। अन्यथा सेबों की टोकरी में एक गन्दे सेब के रखने की तरह एक बुरी आदत भी उसकी इस सृजनात्मकता को तहस-नहस कर सकती है।

अभ्यास से एक ही क्रिया को बार-बार करने से बच्चा उस क्रिया में पारंगत हो जाता है। इसीलिए बचपन में बच्चों को पढ़ाने के लिए बार-बार दोहराने के बाद वर्णमाला और संख्या कंठस्थ कराई जाती है जो बच्चा आजीवन नहीं भूलता। कहा भी है :

करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात के सिल पर परत निसान।।

अंग्रेजी में प्राय: कहा जाता है : PRACTICE MAKES A MAN PERFECT.

अर्थात् अभ्यास व्यक्ति को निपुण बनाता है। अत: निपुणता ग्रहण करने के लिए निरन्तर अभ्यास की आवश्यकता है। यही कारण है कि गायक, नृत्यकार, नाटककार अथवा काव्यकार लोग निरन्तर अभ्यास करते रहते हैं तभी वे अपनी कला में निपुण होते हैं।

रचनात्मकता में मौलिकता का बहुत बड़ा योगदान होता है। बच्चों में यह प्रवृत्ति सामान्य रूप में पाई जाती है। हम देखते हैं कि जब उसे पढ़ना-लिखना नहीं आता है बच्चा पैन या पैन्सिल से अपनी कापी पर कुछ भी उल्टा-सीधा लिखकर अपने माता-पिता के सामने लाकर कहता है देखो मैंने क्या बनाया है। व्यस्त माता पिता उसकी ओर कोई ध्यान न देकर उसे फटकार देते हैं। कापी-पैन की बर्बादी पर उसे कोसने लगते हैं। परन्तु खेद है कि यह कभी नहीं जानने का प्रयास करते कि अपने अन्दर के रचना-संसार को कापी पर उसने अंकित किया है। उसके अन्दर की कला और कलाकार बाहर किस रूप में निकलता है। अगर हम उसे शाबाशी देकर उसकी बनाई आकृति में सुधार करें तो वह आगे चलकर और अधिक रुचि लेकर और अपनी मंजिल को पा सकेगा।

छोटे बच्चों को अक्सर हम मिट्टी से या रेत से खेलते देखते हैं। वे भी कल्पना का संसार बसाकर बड़े खुश होते है। एक साथी द्वारा मिट्टी का घर तोड़े जाने पर फूट-फूट कर रोने लगते हैं। कभी सोचा है क्यों.....? आपके लिए मात्र मिट्टी का घर मगर उसके लिए एक भरा पूरा संसार था जो ध्वस्त हो गया। मानो उसकी सृष्टि में प्रलय आ गई हो।

छोटी लड़कियां जब बचपन में गुड्डे-गुडियों का ब्याह रचती है तो उनके लिए खिलौने पात्र ही होते हैं। यही उनका रचना संसार है। यही उनके अन्दर की अनुभूति को अभिव्यक्त करने का बेहतर माध्यम है। अगर बच्चे के अन्दर की भावनाएं मुखरित हो जाएं तो ही उसका सर्वांगीण विकास सम्भव है। मगर ऐसा तभी हो सकता है अगर घर में, गली-मोहल्ले में, विद्यालय में, समाज में उसे अनुकूल परिवेश प्रदान किया जाए। उसकी कलात्मक रुचियों को सही दिशा निर्देश और प्रोत्साहन प्रदान किया जाए।

विद्यालयों में छोटे बच्चों के लिए आजकल खेल द्वारा शिक्षा [Playway Method] प्रणाली द्वारा बच्चों की अभिरुचियों का आकलन कर उनकी रचनात्मकता को प्रोत्साहित किया जाने लगा है। इसी प्रकार अनेक विद्यालयों में ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान कला-शिविर आयोजित कर कलात्मक, रचनात्मक, सांस्कृतिक कार्यक्रमों द्वारा तथा पाठान्तर क्रियाओं के माध्यम से बच्चों की रचनात्मक रुचियों को विकसित करने का प्रयास नितान्त स्तुत्य है। केवल अध्ययन-अध्यापन से एकांगी विकास द्वारा बच्चों में नीरसता और निठल्लापन आ जाता है बच्चों के अन्दर खेलकूद की भावना, कलात्मकता, नृत्य, संगीत, चित्रकला जैसी गुणवत्ता को अभिव्यक्ति का कोई तो माध्यम होना चाहिए। लड़कियों में रसोई-कला, साज-सज्जा, कढ़ाई-बुनाई आदि की कला को सहज ही विकसित किया जा सकता है। आज 21वीं सदी के प्रगतिशील युग में

(शेष पृष्ठ 6 पर)

वेदों में न्याय तथा दण्ड व्यवस्था

ले०-शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

वेदों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि राज्य संस्था का निर्माण मुख्य रूप से निर्बल, निर्धन, धार्मिक सज्जनों की बलवान, धनवान, अधर्मी, दुष्ट पुरूषों से रक्षा करने हेतु ही किया गया है। इस विषय में ऋग्वेद का कथन है कि 'हे बड़े तेजस्वी, ऐश्वर्य युक्त, अत्यन्त तरूणावस्था युक्त राजन्। आप हमें धूर्त, कपटी, अधर्मी, दान धर्म रहित, कृपण, महाहिंसक मनुष्य से बचाइये। सबको दु:ख देने वाले मनुष्य से हमें पृथक रखिए और हमें मारने की इच्छा करने वाले शत्रु से हमारी रक्षा कीजिए।'

समाज कण्टकों से सामान्य जन की रक्षा के लिए भी राज्य का होना आवश्यक है। इस विषय में ऋग्वेद में कहा गया है, 'हे जगत् को विद्या से पुष्ट करने वाले विद्वान्। आप पापी, दु:ख में शासन करने योग्य, प्रजा को दु:ख देने वाले चोर से जो उद्देश्य पूर्वक हमें पीड़ा देता है उस दुष्ट स्वभाव वाले को प्रजा से दूर कर दीजिए।'

खेती बाड़ी, धन धान्यादि सब पदार्थों की रक्षा पूर्वक उत्पत्ति और न्याय पूर्वक विभाजन राज्य द्वारा ही संभव है, अन्यथा प्रजा परस्पर भक्ष्य भक्षक बनकर नष्ट हो जाती है। इसलिए वेद में कहा गया है-'हे राजन्। सोमादिकों को उत्पन्न करते हुए और धान्यादि का न्यायपूर्वक विभाजन करते हुए हम आपकी स्तुति करते हैं। हे बहुधन, बहुबल। आपसे रक्षित हम जिस धनादि की कामना करें उसे प्राप्त करने योग्य धनादि को हमारे लिए प्राप्त कराइये। हम आपकी कृपा से विस्तृत धनों को प्राप्त करें।'

अत: शासक का कर्तव्य हो जाता है, प्रजा की रक्षा करना तथा उसके लिए राज्य में न्याय की उचित व्यवस्था करना। वेद के अनुसार राजधानी में एक मुख्य न्यायाधीश तथा दो सहायक न्यायाधीश होते थे। विश (जिले) में एक न्यायाधीश होता था।

मनु स्मृति में विकेन्द्रियकृत शासन व्यवस्था का वर्णन है। वहाँ कहा गया है कि 'राजा और राजसभा राजकार्य की सिद्धि के लिए ऐसा प्रयत्न करें जिससे राजकार्य यथावत् सिद्ध हो जो शासक राज्य पालन में सब प्रकार तत्पर रहता है उसको सुख सदा बढ़ता है।'

'इसलिए दो, तीन, पाँच और सौ ग्रामों के बीच में एक एक राजपुरूष को रखे। उन्हीं दश ग्रामों के ऊपर दूसरा, उन्हीं बीस ग्रामों पर तीसरा, उन्हीं सौ ग्रामों पर चौथा और उन्हीं हजार ग्रामों पर पाँचवां पुरूष रखे।'

'प्रत्येक ग्राम में एक ग्रामणी होता था जो ग्राम में आई समस्या को वहीं मिल बैठकर हल कर देता था तथा ग्राम में उत्पन्न किसी भी समस्या की सूचना दश ग्रामाधि पति को गुप्तरूप से कर देता था।'

'दश ग्रामाधि उसी प्रकार अपने क्षेत्र में उत्पन्न हुई समस्या को स्वयं हल करता तथा बीस ग्रामाधिपति को उसकी सूचना दे देता था।'

'इसी प्रकार की व्यवस्था हजार ग्रामाधिपति तक चले।'

'नगरों की व्यवस्था अलग थी, वहाँ सचिवालय का निर्माण होता था। राजा बड़े बड़े प्रत्येक नगर में एक एक जैसे नक्षत्रों के मध्य में चन्द्रमा है इस प्रकार विशाल और देखने में प्रभावकारी, भयकारी कि जिसे देखकर प्रजाओं में नियमों के विरूद्ध चलने में भय का अनुभव हो, जिसमें सब राजकार्यों के चिन्तन और प्रजाओं की व्यवस्था और कार्य के संचालन का प्रबन्ध हो ऐसा ऊँचा भवन अथवा सचिवालय बनावे।'

अब हम वेद के विचार देखते हैं। वेद में शासन की ईकाई ग्राम को माना गया है। ग्राम में पंचायत द्वारा आपसी झगड़े निपटाये जाते हैं। ग्राम पंचायत का मुखिया ग्रामणी कहलाता है। उसकी अतिरिक्त कुछ सरकारी कर्मचारी भी ग्राम में होते हैं। सभी सरकारी और गैर-सरकारी व्यक्ति चरित्रवान, विद्वान् तथा प्रजापालक हों इस प्रकार का वेद में उल्लेख है। वहाँ कहा गया है- 'हे बलशाली, ऐश्वर्यवान्, राजन्। आप अन्याय से दूसरे के धन को हरण करने वाले दुष्ट राज पुरूषों के लिए हम लोगों को मत दीजिए और हम लोग आप धनवानों के मित्रपन के लिए कुछ नहीं होवें। जो प्राचीन सुखकारक क्रियाएं हैं उनको दीजिए। अनुत्पादक लोगों को त्याग दीजिए। दुर्जन कर्मचारियों से हमें दूर कीजिए।'

राजा या प्रधान शासक को न्याय के क्षेत्र में भी विशेषाधिकार प्राप्त है। वह प्रधान न्यायाधीश द्वारा दिये गये निर्णय में भी परिवर्तन कर सकता है। प्रजा का साधारण से साधारण व्यक्ति भी अपने प्रति किये गए अन्याय के विषय में राजा तक अपनी पुकार कर सकता है। सर्वोच्च शासक का यह कर्तव्य है कि उसे निडर होकर बिना किसी झिझक के अपना पक्ष उसके सामने प्रस्तुत करने को प्रोत्साहित करे। यदि वास्तव में उसके साथ अन्याय हुआ हो तो राजा उसे न्याय दिलावे। राजा के ध्यान में यह बात सदैव रहे कि दोषी व्यक्ति दण्ड से न बच सके और निर्दोष व्यक्ति दण्ड का भागी न बने।

स्त्रियों से सम्बन्धित मामले स्त्रियों के न्यायालय में सुने जावें। इस विषय में यजुर्वेद में स्पष्ट कहा गया है, 'हे रानी। आप सुख स्वरूप हैं। सुन्दर व्यवहार करने वाली है। इसलिए आप अच्छी सुख कारक अच्छी शिक्षा में अच्छे प्रकार व्यस्त हूजिए। आप राज्य में महिलाओं का न्याय करने वाली है। अच्छे प्रकार सुख देने वाली विद्या को अनेक प्रकार से प्राप्त कीजिए तथा अन्य को भी प्राप्त कराइये। क्षत्रिय कुल की राजनीति सब स्त्रियों को जनाइये।'

रानी के नेतृत्व में स्त्रियां न्यायाधीश का कार्य करें। इसका उल्लेख अथर्ववेद में इस प्रकार है 'इसके अतिरिक्त राजाओं अथवा विद्वानों की पत्नियां, ऐश्वर्यवान रानी, अग्नि समान तेजस्वी पुरूष की पत्नी, शीघ्रगामी पुरूष की पत्नी वाणियों को प्राप्त हों। अर्थात् न्याय करें। रूद्र की पत्नी श्रेष्ठ जन की पत्नी वाणियों को सुने, जो स्त्रियों के न्याय का काल है। उसकी चाहना करें।'

अपराधी को दण्ड मिलना चाहिये। मनुस्मृति में कहा गया है, 'जो दण्ड है वही पुरूष राजा, वही न्याय का प्रचारकर्ता और सबका शासन कर्ता, वही चारों वर्ण और चारों आश्रमों के धर्म की जामिन है।'

'वास्तव में दण्ड विधान ही सब प्रजाओं पर शासन रखता है। दण्ड ही प्रजाओं की सब ओर से रक्षा करता है। सोती हुई प्रजाओं में दण्ड ही जागता रहता है अर्थात् प्रमाद और एकान्त में होने वाले अपराधों के समय दण्ड का ध्यान ही उन्हें भयभीत करके उनसे रोकता है। दण्ड का भय ऐसा भय है जो सोते हुए भी बना रहता है इसलिए बुद्धिमान लोग दण्डविधान को राजा का प्रमुख धर्म मानते हैं।'

आगे कहा गया है कि 'बिना दण्ड के सब वर्ण दूषित और सब मर्यादाएं छिन्न भिन्न हो जाएं। दण्ड के यथावत् न होने से सब लोगों को आक्रोश जाग जावे।'

न्यायानुसार दण्ड देने से राजा की यशवृद्धि होती है। कहा गया है, न्याय पूर्वक दण्ड का व्यवहार करने वाले राजा का, धनहीन राजा का भी यश, जैसे पानी पर डालने से तेल की बूँदे चारों ओर फैल जाती हैं ऐसे ही सम्पूर्ण जगत् में फैल जाता है।

'मनु के अनुसार रिश्वतखोर कर्मचारियों पर दृष्टि रखी जानी चाहिये। पापी मन वाले जो रिश्वत खोर और ठग राजपुरूष यदि काम कराने वाले और मुकद्दमें वालों से रिश्वत ले ही ले तो उनका सब कुछ हरण करके राजा उन्हें देश निकाला दे दे।'

मनु ने सब प्रकार के अपराधों को अठारह भागों में विभाजित किया है। 'अठारह अपराध इस प्रकार हैं: 1. किसी से ऋण लेने देने का विवाद, 2. धरोहर के मामले में विवाद, 3. दूसरे के पदार्थ को बेच देना, 4. मिल मिलकर किसी पर अत्याचार करना, 5. दिये हुए पदार्थों को न देना, 6. वेतन न देना अथवा कम देना, 7. प्रतिज्ञा से विरूद्ध बर्तना, 8. क्रय-विक्रय में झगड़ा करना, 9. पशु के स्वामी और पालने वालों का झगड़ा, 10. सीमा का विवाद, 11-12. किसी को कठोर दण्ड देना, कठोर वाणी से बोलना, 13. चोरी अथवा डाका डालना, 14. किसी काम को बलात्कार से करना, 15. किसी स्त्री और पुरूष का व्यभिचार होना, 16. स्त्री और पुरूष के धर्म में व्यक्तिक्रम में होना, 17. दाय भाग में विवाद उठना, 18. द्यूत में जड़ पदार्थ अथवा चेतन पदार्थ को दाव पर लगाना।'

'वादी और प्रतिवाद दोनों को न्यायाधीश के सम्मुख उपस्थित होकर अपनी-अपनी बात को बतलाने का अवसर दिया जाता है। वे यदि अपनी बात को स्वयं समझाने में असमर्थ हो तो प्राडविवाक का उपयोग कर सकते हैं। साथ ही उनके अपने कथन की सत्यता प्रमाणित करने के लिए न्यायधीश के सामने गवाह भी उपस्थित करने का अधिकार है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

वेद में विभिन्न रोगों का निदान

ले.-डॉ. अशोक आर्य १०४ शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी २०१०१० गाजियाबाद

स्वामी दयानंद सरस्वती ने आर्य समाज के प्रथम नियम में यह कहा है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। ''वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।'' स्वामी जी वेद के स्वाध्याय को केवल धर्म ही नहीं मानते किन्तु स्वामी जी इसे परम धर्म मानते हैं। इस प्रकार स्वामी जी वेद ज्ञान को सब से ऊपर का, सब से श्रेष्ठ धर्म मानते हैं। इस का कारण भी है और वह यह कि परम पिता परमात्मा ने प्राणी मात्र के कल्याण के लिए सृष्टि के आरम्भ में वेद के इस ज्ञान को दिया था। सृष्टि के आरम्भ में उस प्रभु का दिया गया सीधा ज्ञान होने के कारण सदा सर्वश्रेष्ठ ज्ञान होता है। इसी से ही सब का कल्याण संभव होता है।

वेद के इस ज्ञान में विश्व के सब प्रकार के ज्ञानों को समाविष्ट किया गया है। सब ज्ञानों में से एक ज्ञान चिकित्सा शास्त्र को भी माना गया है। इसलिए ईश्वर प्रदत ज्ञानों में से एक 'चिकित्सा विज्ञान' भी एक महत्वपूर्ण विज्ञान है। यह एक ऐसा विज्ञान है जिसके प्रयोग से न केवल मानव अपितु सब प्राणियों को स्वस्थ व निरोग रखते हुए उनकी आयु को बढ़ाने का कार्य करता है। यदि कभी किसी प्राणी को कोई रोग हो जावे तो इस विज्ञान की सहायता से उसके रोग का निदान करने में सहायता करता है। इस प्रकार उसे पुन: स्वस्थ कर उस प्राणी को पुन: स्वस्थ व प्रसन्न जीवन जीने का अवसर प्रदान करता है। इस सब का माध्यम सदा एक चिकित्सक ही होता है। इस कारण ही समाज में चिकित्सक को बहुत ही सम्मानपूर्ण स्थान मिला है तथा उसका आदर सत्कार करने से कोई भी पीछे नहीं रहता।

चिकित्सा के सम्बन्ध में ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद में जब हम इस सम्बन्ध में कुछ खोजने का प्रयास करते हैं तो हम पाते हैं कि इन तीन वेद में चिकित्सा सम्बन्धी अत्यधिक ही नहीं अपितु गहन चिंतन हुआ है तथा चिकित्सा के सम्बन्ध में इन तीन वेद में एक हजार से भी अधिक मन्त्र हमें प्राप्त होते हैं। जब भी चिकित्सीय विमर्श किया जाता है तो यह आवश्यक हो जाता है कि इन तीन वेद में वर्णन किये गए इन एक हजार मंत्रो को देखा जावे, इन पर मनन चिंतन किया जावे किन्तु यह सब करने से पूर्व मानव शरीर की रचना तथा इसकी कार्य प्रणाली पर भी विचार आवश्यक हो जाता है।

जब तक हम मानव शरीर की रचना तथा इसकी कार्य प्रणाली को नहीं जानेंगे समझेंगे तब तक हम इसके किसी भी रोग के निदान के लिए ठीक से चिकित्सा नहीं कर सकते। इसलिए सर्व प्रथम इस सब को समझना आवश्यक हो जाता है। शरीर रचना व इसकी कार्य प्रणाली को समझने के पश्चात हम इस शरीर में आये रोग के कारणों को जानने का प्रयास करते हैं।

जो रोग आया है, उसके लक्षण क्या हैं, इसे भी समझने का यत्न करते हैं। इस रोग का निदान किस प्रकार संभव हो सकता है ?, इस तथ्य को भी विचारना आवश्यक होता है। इन सब बिन्दुओं पर विचार के पश्चात ही रोग का निदान संभव हो पाता है। अत: आओ हम मिलकर इन सब बिन्दुओं पर चिंतन करें, विचार करें। मानव शरीर की रचना और कार्य प्रणाली ऋग्वेद और अथर्ववेद, यह दो वेद इस प्रकार के हैं, जिन में मानव शरीर की रचना तथा इस शरीर की कार्य प्रणाली पर एक से अधिक अर्थात् 'अनेक सूक्तों में वर्णन मिलता है। इस सम्बन्ध में विचार करते हुए सर्व प्रथम हम अथर्ववेद मन्त्र संख्या १०.२.१ पर विचार करते हैं।

मंत्र इस प्रकार है :

केन पार्ष्णी आभृते पुरूषस्य केन मांसं केन गुल्फौ।
केनाङ्गुली: पेशनी: केन खानि केनोच्छलङ्खौ मध्यत: क: प्रति-ष्ठाम्।।

मन्त्र हमारे शरीर के विभिन्न अंगों पर विचार करते हुए प्रश्न करता है कि हमारे शरीर के इन अंगों को, जिन से हम प्रतिदिन काम लेते हैं, पुष्ट कौन करता है ? हमारी एड़ी को कौन पुष्ट करता है।

इस मन्त्र के माध्यम से एक प्रश्न किया गया है। प्रश्न ही नहीं किया गया अपितु उस आविष्कारक प्रभु का गुणगान किया गया है। मन्त्र कहता है कि वह कौन है, जिसने मनुष्य की एडियों को पुष्ट किया है?

मनुष्य के शरीर का पूरा भार चलते समय एड़ी पर ही होता है। यदि हमारी एड़ी पुष्ट न हो, शक्तिशाली न हो, तो हम ठीक से चल ही नहीं सकते और चलने के बिना हमारे सब कार्य अधूरे रह जाते हैं। इसलिए हमारी एड़ी का पुष्ट होना आवश्यक होता है किन्तु मन्त्र हमारे से प्रश्न कर रहा है कि वह कौन है, जो हमारी एड़ियों को सदा पुष्टि देने का कार्य करता है? मांस कौन जोड़ता है।

मांस प्रत्येक प्राणी के शरीर का एक आवश्यक भाग होता है। यदि शरीर पर मांस न हो तो हमारे शरीर पर केवल हड्डियां ही हड्डियां दिखाई देंगी। इन हड्डियों का दर्शन केवल बच्चों को ही नहीं बड़ों को भी भयभीत करने वाला होता हैं। यह हड्डियां इतनी कमजोर होती हैं कि किंचित से झटके से ही चटक जाती है और फिर इस शरीर से मांस मज्जा के बिना चलना फिरना और जीवन व्यापार का कार्य भी कैसे संभव हो पाता ? इस से स्पष्ट है कि शरीर के संचालन में हड्डियों का विशेष योगदान होता है। इन हड्डियों की रक्षा कौन करेगा ? यदि हड्डियों पर मांस का आवरण नहीं तो हड्डियों का यह ढांचा किसी काम का न होता। इसलिए हमारे शरीर पर मांस मज्जा का एक आवरण चढ़ाया गया है। यह आवरण ही इन्हें मजबूरी देता है। हड्डियों को पुष्टि देने वाला यह मांस हमारे शरीर पर किसने सजाया है ? मन्त्र इस प्रश्न का भी उत्तर मांग रहा है।

शरीर के विभिन्न अंग किसने बनाए हैं।

हमारा शरीर अनेक प्रकार के सुन्दर अंगों से सजा है। जैसे हमारी टांगों को बल प्रदान करने वाले सुन्दर टखने, हमारे शरीर के कार्य संचालन के लिए बड़ी ही सुन्दर अंगुलियाँ, हमारे कार्य तथा हमारी आवश्यकता को अनुभव करने वाली यह हमारी इन्द्रियाँ, इतना ही नहीं यदि हमारे पावों के नीचे तलवे न होते तो हम भ्रमण भी कर पाने में असमर्थ होते, इन साफ़ सुंदर तलवों को, तलवों के साथ इस भूलोक के बीच आ कर हमने पाँव रखे, यहाँ भ्रमण करने लगे, घूम घूम कर इसकी ओषध व फल फूलों को चखने लगे। हमारे शरीर के यह सब अंग किसने बनाए हैं ? कोई तो ऐसा कारीगर होगा, जिसने हमारे शरीर में यह सब सुन्दर सुन्दर अंग लगा दिए हैं।

इस प्रकार मन्त्र हमें उपदेश करते हुए पूछ रहा है कि हमारे शरीर की हड्डियां, पाँव की एड़ियाँ, टखने, अंगुलियाँ तथा पाँव के सुन्दर तलवे हमारे शरीर पर सजाने वाला कौन कारीगर है ? यह सब अपने आप तो हुआ नहीं, इसके लिए कोई तो निर्माता होगा, कोई तो निर्माण करने वाला होगा ? मन्त्र संकेत करता है कि हमारे शरीर के यह सब अवयव बनाने वाला वह परम पिता परमात्मा ही हो सकता है, अन्य कोई नहीं। इसलिए उस प्रभु का हमें सदा स्मरण करना चाहिए।

पृष्ठ 4 का शेष-बच्चों में सृजन-शक्ति...

कोई ऐसा कार्यक्षेत्र विभाजित नहीं है। पुरुषों को दूरदर्शन पर रसोई के बढ़िया पकवान तैयार करते और स्त्रियों को खेतों में हल चलाते देखा जा सकता है। यह सब रुचियों को विकसित करने की ही बात है। आज बेरोज़गारी क्यों है? कारण यह है कि सभी बच्चे पढ़कर अफसर ही बनना चाहते है। दस्तकारी कोई नहीं करना चाहता। पैतृक कार्य कोई नहीं अपनाना चाहता। अपनी रुचियों का विकास न कर पाने के कारण कुंठा का शिकार हुए आज के बच्चे असन्तोष की भावना से ग्रस्त हो रहे है।

बच्चों में सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करने के लिए उनमें स्पर्धाएँ आयोजित की जानी चाहिएं। बच्चों में दूसरे की रचना-प्रक्रिया के प्रति-स्पर्धा की भावना हो ईर्ष्या नहीं। प्रत्येक बच्चा अपनी रचना को श्रेष्ठ भले ही माने मगर उसमें दूसरे की अच्छी रचना की प्रशंसा करने का साहस भी होना चाहिए और असफलता को सहन करने की शक्ति भी। उसे यह बता दिया जाना चाहिए कि कई बार असफलता सफलता की सीढ़ी बन जाती है। सृजनात्मकता में परिश्रम का बहुत बड़ा योगदान है। मेहनत से किया गया काम मन को सुख और शान्ति प्रदान करता है। मौलिक रचना सदैव प्रोत्साहित करती है। कला का कोई अन्त नहीं होता। अत: कला का निरन्तर विकास ही कलाकार का उद्देश्य होना चाहिए। अपनी अनुभूति की सार्थक एवं रचनात्मक अभिव्यक्ति ही कलाकार की सच्ची साधना होती है। इन सब बातों का बच्चों को ज्ञान होना चाहिए।

अगर हम बच्चों की रचनात्मक रुचियों को प्रोत्साहित करें आज के नादान बच्चे कल के कलाकार हो सकते हैं और अपनी नैसर्गिक प्रतिभा का विकास कर अपने व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास कर सकते हैं। अपनी रुचि को निपुणता के शिखर पर पाकर वे भी अपने जीवन को सफल बना सकते हैं। हो सकता है उनकी रचनात्मकता उनके जीवन में व्यवसाय के रूप में उनके लिए सहायक सिद्ध हो। आइए हम सब बच्चों के सर्वांगीण विकास व उनके सफल जीवन के लिए उनकी छिपी गुणवत्ता व प्रतिभा को विकसित करने के लिए उनके अन्तर्निहित रचनात्मक संसार को प्रफुल्लित करने के लिए यथासम्भव योगदान दें।

पृष्ठ 5 का शेष-वेदों में न्याय...

वादी और प्रतिवादी के सामने ही साक्षी की गवाह लेनी चाहिये, परोक्ष में कभी नहीं। यदि साक्षी आज्ञा देने पर भी साक्षी देने को तैयार नहीं होता तो वह दण्डनीय होता है।'

'साक्षियों को बुलाकर विशेष रूप से ईश्वर की शपथ दिलाकर और पुराणोक्त सत्य बोलने के धर्म का महात्म्य बताकर उनसे गवाही लेनी चाहिये। झूठ बोलने में पुराणोक्त अनेक दोष बताकर धीरे-धीरे उन्हें अत्यन्त भयभीत करें।'

'सब वर्णों में धार्मिक, विद्वान्, निष्कपटी, सब प्रकार के धर्म को जानने वाले, लोभरहित, सत्यवादियों की न्याय व्यवस्था में साक्षी करें। इसके विपरीत को कभी न करे।'

असत्य साक्षी देने पर दोषानुसार दण्ड व्यवस्था की गई है। 'लोभ आदि कारणों में से किसी कारण के होने पर जो कोई झूठी साक्षी देता है, उसके लिए दण्ड व्यवस्थाओं को क्रमश: कहा गया है।'

अपराधियों को तीन श्रेणियों में बांटा गया है-सामान्य अपराधी, शिक्षित अपराधी तथा वेदों का विद्वान् अथवा उच्च पदस्थ राजकर्मचारी इनमें से प्रत्येक बाद वाले को चाहने वाले से अधिक दण्ड दिया जायेगा। विभिन्न अपराधों के लिए दी जाने वाली सजा भी मनुस्मृति में घोषित है। इस लेख में उन सभी का दिया जाना संभव नहीं है। रिश्वत लेकर अन्याय करने वाले न्यायाधीशों को भी दण्ड देने का प्रावधान है।

'मंत्री अथवा न्यायाधीश जिस मुकद्दमे के निर्णय को गलत अथवा अन्यायपूर्वक कर दें तो उस मुकद्दमें को राजा स्वयं करे और अन्यायपूर्वक निर्णय करने वाले उन अधिकारियों को एक हजार पण से दण्डित करे।'

'इसी प्रकार निर्णयों में कपट व्यवहार करने वालों को भी दण्डित करने की व्यवस्था मनुस्मृति में की गई है। दण्ड व्यवस्था के अन्तर्गत हम यहाँ केवल चोरों को दिये जाने वाले दण्ड पर विचार करेंगे। जो चोर रात्रि में सेंध मार कर चोरी करते हैं। राजा उनके हाथ काटकर तेज शूली पर चढ़ा दे।'

'राजा चोरों को अग्नि, भोजन, शस्त्र, स्थान देने वाले और चोरी के माल को रखने वाले लोगों को भी चोर की ही तरह दण्डित करे।'

'स्त्री-पुरूष धर्म सम्बन्धी विवाद और उनका निर्णय' विषय पर भी मनुस्मृति अध्याय 9 के श्लोक संख्या 1 से श्लोक संख्या 10-2 तक विचार किया गया है। फिर श्लोक संख्या 103 से श्लोक संख्या 176 तक दाय भाग विषयक विवाद के विषय में तथा श्लोक संख्या 192 से श्लोक संख्या 221 तक मातृ धन का विभाग कैसे हो इस पर विचार किया है।

मनुस्मृति को वैदिक राष्ट्र का संविधान माना जा सकता है। इसमें राजकार्य सम्बन्धी प्रत्येक विषय पर पर्याप्त विवरण उपलब्ध है। इसके विपरीत वेद सम्पूर्ण विश्व को 'भवत्येक नीडम्' मानकर चलता है और उसमें प्राणी मात्र की सुरक्षा तथा सम्वर्धन के उपाय सुनाये गए हैं। अब हम पुन: वेद की ओर आते हैं। वेदो में भी सभी तरह के अपराधों एवं उनके दण्ड विधान की व्यवस्था की गई है! एक एक मंत्र में ही अपराध तथा उसके दण्ड की व्यवस्था वेदों में है। पाठकों के लिए हम वेद के कुछ मंत्र दे रहे हैं। वेद के अनुसार कोई भी व्यक्ति चाहे वह कितना ही बड़ा आदमी हो अपराध करने पर दण्ड अवश्य भुगते। विशेषकर राष्ट्र द्रोही व्यक्ति दण्ड से बचने न पाये। अथर्ववेद में कहा गया है, 'हे विजयी पुरूषो। यह व्यक्ति राजद्रोही होकर उस स्थान से कुछ कुमन्त्र करना चाहता है। अग्नि समान तेजस्वी राजा उसको अन्न नहीं पहुंचावे। व्यवहार कुशल लोग उसकी पुकार को नहीं सुनें। मेरी ही पुकार को तुम लोग आकर प्राप्त होओ।

इसी विषय को विस्तार देते हुए कहा गया है,

यममी पुरोदधिरे ब्रह्मणाय भूतये।

इन्द्र स: ते अधस्पदं तं प्रत्यस्यामि मृत्ये।

अर्थात् इन शत्रुओं ने जिस वृद्धशील पुरूष को हमारी हार के लिए उच्च पद पर रखा है। हे ऐश्वर्य सम्पन्न राजन्। उसको मैं तेरे पैर के नीचे मृत्यु के लिए प्रतिकूलता से फेंकता हूँ। इस मंत्र में बताया गया है कि बड़े पदों पर नियुक्त लोग धन और पद के लालच में शत्रुओं से मिलकर राज्य को संकट में डाल देते हैं अत: उच्च पदस्थ कर्मचारियों पर भी कड़ी दृष्टि रखी जानी चाहिए तथा उनके आचरण में थोड़ा सा भी अन्तर आवे तो उसकी परीक्षा करके उचित निर्णय लेना चाहिए। रात्रि के अन्धकार में घात लगाकर सेंध मार कर चोरी करने वाले चोर के लिए वेद में कहा गया है, 'आज जो पाप चीतने वाला वैरी चोर मनुष्य आवे। रात्रि प्रतीती करके उसके गले को सर्वथा शिर को सर्वथा तोड़ डाले।' (क्रमश:)

महर्षि दयानन्द सरस्वती सम्बन्धित प्रश्नोत्तरी

श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल अधिष्ठाता साहित्य विभाग द्वारा प्रसिद्ध विद्वानों के सहयोग से तैयार प्रश्नोत्तरी। आशा है आर्य मर्यादा के पाठक इससे लाभान्वित होंगे।

गतांक से आगे

प्र.61-कर्षण जी ने सैनिकों को क्या आज्ञा दी?
उत्तर-कि इस निर्मोही के सदा साथ रहो।

प्र.62-मूलशंकर ने सैनिकों को कब धोखा दिया ?
उत्तर-तीसरी रात जब वे सो रहे थे।

प्र.63-रात्रि को मूलशंकर कहां जाकर छिपे?
उत्तर-पुराने मन्दिर के पेड़ पर छिपकर।

प्र.64-सैनिकों के वापिस जाने पर मूलशंकर कहां पहुंचे?
उत्तर-बडौदा के चैतन्य मठ में।

प्र.65-शुद्ध चैतन्य सन्यास की दीक्षा क्यों लेना चाहते थे?
उत्तर-ताकि निश्चिंत होकर विद्या ग्रहण कर सके।

प्र.66-शुद्ध चैतन्य को सन्यास की दीक्षा किसने दी ?
उत्तर- स्वामी पूर्णानन्द जी ने।

प्र.67-सन्यास के बाद शुद्ध चैतन्य का क्या नाम रखा गया?
उत्तर-स्वामी दयानन्द सरस्वती।

प्र.68-सन्यास के समय स्वामी दयानन्द की आयु कितनी थी?
उत्तर-चौबीस वर्ष दो मास।

प्र.69-स्वामी जी ने किस स्थान पर सन्यास लिया था?
उत्तर-चाणोद नामक स्थान पर।

प्र.70-चाणोद कर्नाली में स्वामी दयानन्द को कौन दो योगी मिले?
उत्तर-ज्वालानन्द गिरी और शिवानन्द गिरी।

प्र.71-ज्वालानन्द गिरी और शिवानन्द गिरी ने स्वामी दयानन्द गिरी को कहां बुलाया?
उत्तर-अहमदाबाद के दूधेश्वर मन्दिर में।

प्र.72-अहमदाबाद के दूधेश्वर मन्दिर में स्वामी जी को योगी ने क्या सिखाया?
उत्तर-योग का प्रत्येक भेद व रहस्य।

प्र.73-अहमदाबाद के पश्चात स्वामी दयानन्द कहां गए और क्यों?
उत्तर-आबू पर्वत पर योगियों से मिलने की इच्छा से।

प्र. 74-1912 सम्वत् में कुम्भ के मेले में जब स्वामी दयानन्द जी योगियों से मिलने की इच्छा से गए तो स्वामी दयानन्द जी की आयु कितनी थी?
उत्तर-बत्तीस 32 वर्ष।

प्र.75-1912 सम्वत् के बाद स्वामी जी हरिद्वार से कहां-कहां गए?
उत्तर-टिहरी, श्रीनगर, जोशी मठ, बद्रीनारायण आदि अनेक स्थानों पर।

प्र. 76-स्वामी दयानन्द मथुरा कब पहुंचे?
उत्तर-कार्तिक सुदि सम्वत् 1917 को।

प्र. 77-मथुरा में स्वामी दयानन्द जी किसकी कुटिया में गए?
उत्तर-दण्डी स्वामी विरजानन्द जी की कुटिया पर।

प्र.78-स्वामी दयानन्द के दरवाजा खटकाने पर गुरू विरजानन्द ने क्या कहा?
उत्तर-कौन है?

प्र.79-स्वामी दयानन्द ने क्या उत्तर दिया?
उत्तर- यही जानने के लिए तो आया हूं कि मैं कौन हूं।

प्र.80-गुरू विरजानन्द ने क्या किया?
उत्तर दरवाजा खुलवा दिया। (क्रमश:)

श्री शशि कोमल आर्य समाज बाजार श्रद्धानंद अमृतसर के प्रधान बने

दिनांक 1 जुलाई 2018 दिन रविवार को आर्य समाज बाजार श्रद्धानंद अमृतसर का चुनाव आर्य समाज के प्रांगण में हुआ जिसमें सर्वसम्मति से श्री शशि कोमल जी को प्रधान चुना गया। आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग के पश्चात चुनावी कार्यवाही प्रारम्भ हुई। चुनाव पर्यवेक्षक वैदिक प्रवक्ता डा. पवन कुमार त्रिपाठी जी की देख रेख में चुनावी प्रक्रिया आरम्भ हुई। प्रधान श्री ओम प्रकाश जी भाटिया जी का स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण उन्होंने अपनी आर्य समाज बाजार श्रद्धानंद अमृतसर की कार्यकारिणी को भंग करके प्रधान पद से अपना त्यागपत्र पर्यवेक्षक श्री त्रिपाठी जी को सौंप दिया। जिसे स्वीकार कर लिया गया। पर्यवेक्षक ने आर्य समाज के सभी सभासदों को गम्भीरतापूर्वक विचार विमर्श करने का सुअवसर दिया। सभी सभासदों ने गहन मंथन के बाद अपने अपने विचार प्रस्तुत किये। जिसके पश्चात सर्वसम्मति से श्री शशि कोमल जी को आर्य समाज का प्रधान घोषित कर दिया। एक अन्य प्रस्ताव में आर्य समाज बाजार श्रद्धानंद अमृतसर के नवनिर्वाचित प्रधान श्री शशि कोमल जी को आर्य समाज की कार्यकारिणी एवं अन्य पदाधिकारी घोषित करने का अधिकार दिया गया। श्री शशि कोमल जी ने अपने अधिकारों का प्रयोग करते हुये कार्यकारिणी की घोषणा निम्न प्रकार से की।

आर्य समाज बाजार श्रद्धानंद अमृतसर के प्रधान निर्वाचित होने पर श्री शशि कोमल जी , उनके साथ खड़े हैं पूर्व प्रधान श्री ओम प्रकाश भाटिया एवं अन्य।

श्री ओम प्रकाश जी भाटिया संरक्षक, श्री शशि कोमल जी प्रधान, श्री पुरुषोत्तम चंद शर्मा महामंत्री, डा. रवि कांत कोषाध्यक्ष, श्री संजय गोस्वामी मंत्री, श्री पवन टंडन उप प्रधान, श्री पवन त्रिपाठी वेद प्रचार मंत्री एवं उप प्रधान, श्री बलराज जूली सदस्य, डा. ऋचा सचदेवा सदस्य, श्री रविदत्त आर्य सदस्य, श्री बाबी महाजन सदस्य, श्री रमन बाही सदस्य। श्री शशि कोमल जी ने आर्य समाज का प्रधान बनने पर सभी सभासदों का धन्यवाद किया और कहा कि वह आर्य समाज के प्रचार एवं प्रसार के लिये हर संभव कोशिश करेंगे जिसमें आप का भी सहयोग जरूरी है। उन्होंने कहा कि जड़ पूजा करते- करते पाषाणबुद्धि हो चुके लोगों को मूर्तिपूजा के मकड़जाल से छुड़ाने का वह हर संभव प्रयास करेंगे। उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने पाखण्ड और अन्धविश्वास में फंसकर अपना अस्तित्व भूले हुए लोगों को उनके अस्तित्व का स्मरण कराया। बाल विवाह, सती प्रथा, दहेज प्रथा की बुराईयों ने समाज को अन्दर ही अन्दर खोखला कर दिया था, इन बुराईयों को दूर करने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने समाज सुधारक की भूमिका निभाई। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से एक ऐसी राष्ट्रीय विचारधारा का प्रचार किया जिससे प्रेरणा लेकर अनेकों नवयुवकों ने अपने आपको देश की आजादी के सर्वात्मना समर्पित कर दिया। उन्होंने कहा कि हम आर्य समाज का प्रचार प्रसार करके स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के ऋण से उऋण हो सकते है जिसका हम सब को मिल कर प्रयास करना चाहिये।

पुरुषोत्तम चंद शर्मा, महामंत्री

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में सात दिवसीय योग शिविर का आयोजन

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर में सात दिवसीय योग कैम्प का आयोजन किया गया जिसमें कई लोगों ने इसका लाभ उठाया। योग शिविर में भाग लेते हुये आर्य जन।

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर में सात दिवसीय योग कैम्प का आयोजन किया गया जिसमें कई लोगों ने इसका लाभ उठाया। भारत स्वामिभान ट्रस्ट, पतंजलि योग समिति, महिला पतंजलि किसान सेवा समिति की ओर से आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर में चल रहे सात दिवसीय योग में साधकों को रीड़ की हड्डी सम्बन्धी विस्तारपूर्वक जानकारी दी गई। भारत स्वामिभान ट्रस्ट राजेन्द्र शिंगारी के नेतृत्व में योग साधकों को जिला प्रभारी धीरज भगत और आर्य समाज के प्रधान श्री रणजीत आर्य ने योग करवाया। इस मौके पर जिला प्रभारी धीरज भगत व मंदिर के प्रधान श्री रणजीत आर्य ने बताया कि रीढ़ की हड्डी हर इंसान के शरीर का आधार होती है। ज्यादातर मामलों में देखा जाता है कि जब किसी को कमर दर्द होता है तो वह इंसान थोड़े दिनों के लिये आराम करता है और फिर वापस से काम पर चला जाता है। ये दर्द आराम करने से तो चला जाता है लेकिन लोगों को नहीं पता होता कि यह दर्द दोबारा लौट कर आ सकता है। ज्यादा समय तक लाइलाज रहने या स्थिति के गम्भीर हो जाने पर दर्द बहुत ज्यादा हो जाता है। उन्होंने बताया कि रीढ़ की हड्डी के ट्यूमर में असामान्य कोशिकाओं के ढेर होते हैं जो रीढ़ की हड्डी इसकी सुरक्षा परतों या रीढ़ की हड्डी को अवरित करने वाली परत की सतह पर विकसित होते हैं। उन्होंने गर्दन दर्द योग स्पोडिलाइटिस के लिये योग आसान के बारे में भी बताया कि लगातार गर्दन को थोड़ा झुका कर रखना ही स्पोडिलोसिस का मुख्य कारण बनता है। कोई भी मुद्रा जो गर्दन को झुकने के लिये मजबूर करके उपास्थि पर लगातार दबाव बनाये वह स्पोडिलोसिस का कारण हो सकता है जैसे कि खड़े होकर टेबल पर सब्जी काटना, बहुत देर तक लिखते रहना इत्यादि। जब भी आप लगातार अपने कार्यालय के कम्प्यूटर या अपने व्यक्तिगत स्मार्टफोन पर या टैवलेट पर लम्बी अवधि तक काम करते हैं तो वास्तव में आप उपास्थि पर अतिरिक्त दबाव डालते हैं जो उस दबाव के लिये बना नहीं है। इस वजह से हड्डियां और समग्र ग्रीवा बांस क्षेत्र प्रभावित हो जाता है और सिर के पीछे लगातार गर्दन दर्द, अकड़न, कंधे या सिर दर्द का कारण बनता है। अगर सही समय पर उचित इलाज न किया जाये तो सर्वाइकल स्पोडिलोसिस का रूप ले लेता है। स्पोडिलाइटिस या स्पोडिलोसिस बाबा रामदेव के गर्दन दर्द योग का नियमित रूप से अभ्यास करने से काफी हद तक ठीक हो जाता है या आसानी से प्रतिबंधित किया जा सकता है जब योग जैसा प्राकृतिक उपाय है तो आप को थैरेपी पर पैसा खर्च करने की जरूरत नहीं। इस अवसर पर ईश्वर चंद रामपाल, सीमा शिंगारी, रेखा, ओम प्रकाश मेहता, पूनम मेहता, हर्ष लखनपाल, प्रवीण लखनपाल, सुरेन्द्र अरोड़ा, विजय चावला, आर्य मित्र गुप्ता, अनु आर्या, चौधरी हरी चंद, लक्ष्मी भाटिया, निशा, काजल शर्मा, राजेश वर्मा, दिनेश शर्मा, सुरेश ठाकुर, सुदर्शन आर्य, सतपाल मल्होत्रा, भूपेन्द्र उपाध्याय, सुरेन्द्र अरोडा, विजय चावला, चौधरी हरिचंद, राजीव कुन्दरा, सुनीत भाटिया, ईशान मल्होत्रा, दिव्या आर्या, सान्या आर्या, अनिल मिश्रा, नलिनी उपाध्याय, कुबेर शर्मा, अनु आर्य, रानी अरोडा, कमलेश घई, सुभाष आर्य, केदार नाथ शर्मा, पवन शुक्ला, अमित सिंह, नरेन्द्र कुमार, ललित मोहन कालिया, डा. सुभाष चन्द्र, संदीप अरोडा, गितिका अरोडा, कविता अरोडा, वन्दना अरोडा, संगीता तिवारी, प्रियंका, प्रिया मिश्रा, कमल कुमार, दिव्या मेहता, कमल, अंजु शर्मा, उर्मिला शर्मा, दिपांश अरोडा, वीर बहादुर, मंजू देवी सहित बड़ी संख्या में इलाके के लोग शामिल होते रहे।

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org**
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।